राजस्थान के वाद्य यन्त्र

★ राजस्थान के वाद्य यन्त्रों को मुख्यत: चार भागों में बाँटा गया है।

① तत् वाद्य यन्त्र → तारों से निर्मित
  → रावण, तदुरा, सारगी

② सुषिर वाद्य यन्त्र → फूँक मार

③ अवनद्ध / ताल → चमड़े

④ घन वाद्य ~~यन्त्र~~ → धातुओं

① तत् वाद्य यन्त्र :-

★ राज॰ के ऐसे वाद्य यन्त्र जिन्हें तारों से निर्मित किया जाता है।

★ ऐसे वाद्य यन्त्र जिनमें स्वरों की उत्पत्ति तारों के माध्यम से की जाती है।

रावण की एक साँसु गुर्जरी पंगु थी

- रावण ↓ रावणहत्था
- एक ↓ इकतारा
- साँसु → सारगी, सुरिन्दा
- गुर्जरी ↓ गुर्जरी
- पंगु → अपंग, अपंग

- दुक - दुकाको
- काम - कामायचा
- सुर - सुरमण्डल
- रब - रबाब
- रब - रबाज
- तदुरा - तदुंरा
- जतंर - जंतर

★ **रावण हत्था :-**

★ रावणहत्था को नारियल की खोल से निर्मित किया जाता है

★ इस वाद्य यत्र का प्रयोग रामदेवजी व पाबूजी की फड़ का वाचन करते समय किया जाता है।

प्रसिद्ध :- फड़ चित्रण कला - शाहपुरा (भीलवाड़ा)

Note :-
- सबसे लम्बी फड → देवनारायणजी
- सबसे चौड़ी फड़ → देवनारायणजी
- सर्वाधिक चित्रो वाली फड → देवनारायणजी
- सर्वाधिक लोकप्रिय फड़ → पाबूजी
- सबसे प्राचीन फड़ → गोगाजी
- सबसे नवीन फड़ → कोरोना फड़, अमिताबच्चन

ii) इकतारा वाद्य यंत्र :—

* इस वाद्य यंत्र का सम्बध नारद व मीरा से माना जाता है।
* इस वाद्य यंत्र का प्रयोग जीण माता की अराधना मे चीरजा नामक लोकगीतो के साथ बजाया जाता है।

Note — जीणमाता के गीता को सबसे लम्बा गीत माना जाता है।

iii) सारंगी वाद्य यंत्र :—

सारगी वाद्य यंत्र
- कुल तार — 27
- लकड़ी — सागवान, शीशम
- जाति — लंगा जाति के पुरुषो के द्वारा
- अवसर — मांगलिक अवसरो पर
- उपनाम — वाद्ययंत्रो का सिरमोर
  - * सभी तत वाद्ययंत्रो में सर्वश्रेष्ठ
  - * कामायचा का राजा

(iv) तंदुरा वाद्य यंत्र :—

* रामदेवजी के मेले के अवसर पर (भाद्रपद शुक्ल -2-11) द्वितीया से एकादशी कामड़ जाति की महिला के द्वारा ख्यावले नामक गीतो के साथ तंदुरा वाद्य पत्र बजाया जाता है।

* उपनाम → चौतारा, वेणो

(v) जंतर वाद्य पत्र :—

* देवनारायण जी की फड का वाचन करते समय गुर्जर जाति के भोपा / पूजारी / चौडला द्वारा जंतर वाद्य पत्र बजाया जाता है।

(vi) कामायचा वाद्य पत्र :—

- मूलत - ईरान
- कुलतार - 27
- लकड़ी - सागवान / शीशम
- अवसर - मागलिक अवसर
- जाति - मांगणीयारी जाति के पुरुष
- उपनाम - सांरगी की रानी

सुषिर वाद्य पत्र

परि :- ऐसे वाद्य जिन्हे फूक मारकर बजाए जाते है। उन्हे सुषिर वाद्य पत्र कहते हैं।

→ तू भूलं ना कर मौसम में सीन देखने की 'नड़'

↓ तुरई | भूंगल / रण भेरी | नागफणी | करणा | मोरचंग सतारा मशक | सींग सींगी

→ शहनाई
→ अलगोजा
→ बांसुरी
→ बांकिया
→ बीन / पुंगी

(1) अलगोजा वाद्य यंत्र :-

↳ राज॰ का राज्य वाद्य → अलगोजा

★ इस वाद्य पत्र को दो बासुरियो से जोड़कर बनाया जाता है।

★ तेजाजी की अराधना में किसानो के द्वारा तेजाटेर नामक गीतो के साथ बजाया जाता हैं। अलगोजा वाद्य यंत्र

(2) शहनाई वाद्य यंत्र :-

→ कुल छेद - 7

→ लकडी - सागवान / शीशम

→ प्रसिद्ध वादक - " बिस्मिल्ला खाँ "

↳ सन 2001 मे "भारत रत्न"

→ अवसर – मांगलिक अवसर

→ उपनाम → ① नफीरी
② सुन्दरी

③ मोरचंग वाद्य यंत्र →

→ मूलत: → यूरोप

→ अवसर → मांगलिक अवसर पर

→ जाति → मांगणियारी + लंगा

→ उपनाम → [→ राज० का सबसे छोटा वाद्य यंत्र
→ राज० का जूप हार्फ

④ बीन / पुंगी वाद्ययंत्र :–

→ अवसर – सपेरा / कालबेलिया नृत्य
→ जाति – कालबेलिया जाति की महिलाओ
→ विशेष – बीन / पुंगी वाद्य यंत्र को कालबेलिया नृत्य के साथ बजाया जाता है।

Note → चरी नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना → "फलकू बाई"

→ चकरी — "फलकूबाई" जाति गुर्जर
→ तेरहताली — मांगीबाई
→ भवाई — तारा शर्मा व पुष्पा व्यास
→ कालबेलिया नृत्य — गुलाबी बाई
→ शंकरिया — कंगना सपेरा

Note → राज० का एकमात्र नृत्य जिसे सन् 2010-11 में विश्व धरोहर (यूनेस्को) सूची में शामिल किया गया
→ कालबेलिया नृत्य

⑤ तुरई वाद्य यंत्र :—

★ तुरई वाद्य यंत्र का प्रयोग प्राचीन समय में राजदरबारों व मन्दिरों में किया जाता है।

⑥ भूंगल / रणभेरी :—

★ प्राचीन समय में भील जनजाति के पुरुषों के द्वारा युद्ध स्थलों पर भूंगल वाद्य यंत्र बजाया जाता है।

③ अवनद्ध / ताल वाद्य यंत्र :—

★ ऐसे वाद्य यंत्र जिन्हें चमड़े से निर्मित किया जाता है।

① मृदंग / पखावज
② नगाड़ा
③ बम
⑬ रंवजरी
④ ताशा
⑤ नौबत
⑥ मांदल
⑭ ढपली
⑦ डैरु
⑧ चंग
⑨ ढप
⑮ माठ
⑩ कुण्डी
⑪ ढोल
⑫ डमरू

(1) **नगाड़ा वाद्य यंत्र :-**

- → आकृति – सुपारी की जैसे
- → प्रसिद्ध – मेवात (अलवर + भरतपुर)
- → अवसर – बम नृत्य के साथ
- → जादुगर – रामकिशन सोलंकी

(2) **ताशा वाद्य यंत्र :-**

- जाति – मुस्लिम जाति के पुरुषों के द्वारा
- अवसर – मोहर्रम के अवसर पर ताजिया निकालते समय
- विशेष – मुस्लिम समाज के पुरुषों द्वारा ताजिया निकालते समय बजाया जाता है।

(3) **मांदल वाद्य यंत्र :-**

★ इस वाद्य यंत्र को गणगौर के अवसर पर शिव व पार्वती जी की आराधना में बजाया जाता है।

मांदल
- → डिंड़
- → नृत्य → गरासिया जनजाति का
- → आभूषण → गले का
- → वाद्य यंत्र → अवनद्ध / ताल

(4) माठ व डैरू वाद्य पत्र :—

→ पाबूजी की अराधना मे रेवाड़ी / राईका जाति के पुजारीयो के द्वारा गाए जाने वाले पावडे नामक गीतो के साथ बजने वाले वाद्य पत्र माठ व डैरू लोकगीत कहलाते है।

(5) डैरू वाद्य पत्र :—

→ डैरू वाद्य पत्र को भैरूजी के भजनो के साथ बजाया जाता है।

(6) चंग वाद्य पत्र :—

→ शेखावाटी क्षेत्र मे होली के अवसर पर पुरुषो के द्वारा बजाया जाने वाला वाद्यपत्र

(7) बम वाद्य पत्र —

→ मेवात क्षेत्र मे नई फसल की आगमन की खुशी मे बम वाद्य पत्र बजाया जाता है।

→ घन वाद्य पत्र :— ऐसे वाद्य पत्र जिन्हे धातुओ से निर्मित किया जाता है।

1. लेजीम
2. घुरालीया
3. रमझोल
4. खड़ताल
5. करताल
6. मंजीरा
7. झांझ
8. टिकोरी
9. झालर
10. घण्टा
11. घण्टी
12. थाली
13. घड़ा
14. चिमटा
15. घुघरू
16. टामक / दमामा

1) लोजिमवाद्य पत्र :-

→ गरासिया जनजाति के पुरुषो द्वारा दिपावली के अवसर पर बजाया जाता है।

2) खण्डताल वाद्य पत्र :-

→ खण्डताल वाद्य पत्र का सम्बध नारद जी से माना जाता है।

(3) झांझ वाद्य पत्र :-

→ शेखावाटी क्षेत्र में विवाह के अवसर पर पुरुषो के द्वारा कच्छीघोडी नृत्य के साथ झांझ वाद्य पत्र बजता है।

(4) मजीरा वाद्य पत्र :-

→ रामदेवजी की अराधना में कामड़ जाति की महिला के द्वारा तेरहताली नृत्य के साथ मजीरा वाद्य पत्र बजाया जाता है।

(5) थाली वाद्य पत्र :-

→ संतान प्राप्ति पर बजाया जाता है।

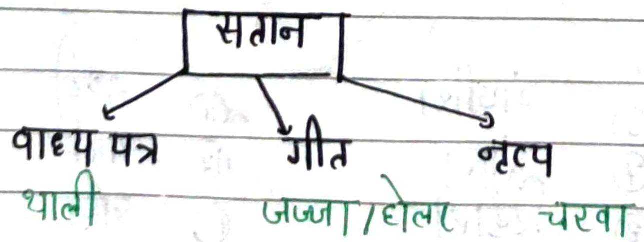

(6) रमझोल वाद्य यत्र :-

→ स्वर्ग में अप्सराओं के द्वारा नृत्य के दौरान बजाया जाता है। रमझोल वाद्य यत्र !-